

भाव परिचय

भाव संस्कृत शब्द है, जिसका अभिप्राय होता है भावनायें। किसी भी कुंडली के 12 भावों से उस जातक के जीवन का सब कुछ समझा जा सकता है। प्रत्येक भाव जातक के कुछ गुण / विषयों को दर्शाता है।

प्रथम भाव

- इस भाव से हम जातक का सर, मानसिक क्षमता, आकृति, व्यवहार, कद, काठी, नाड़ी, जातक के शरीर के बारे में देखते हैं। यदि हम मुख्य रूप से समझें तो यह सबसे महत्वपूर्ण भाव है, क्योंकि यह भाव ही इस संसार के सभी स्वरूपों का अनुभव करता है उदाहरण से समझें तो, यह भाव घर की बिजली के फ्यूज की भांति होता है क्योंकि यह पूरे घर अर्थात भावों में बिजली पहुंचाने का कार्य करता है, जिससे कि जातक का जीवन चलता है।
- जब कोई जातक अपने आपको संबोधित करता है या जब कोई किसी जातक को संबोधित करता है तो यह संबोधन प्रथम भाव अर्थात लग्न के लिए है।
- इस भाव का बलवान होना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमारा प्रतिरक्षा तंत्र भी है, इस बात को हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि विपरीत परिस्थिति में कोई जातक किस प्रकार का व्यवहार करता है, वह टूट जाता है या डटकर स्थिति का मुकाबला करता है, यह लग्न से देखा जाता है।

- जातक का व्यक्तित्व कैसा है, उसकी बुद्धि में क्या विचार आते हैं, यह सब प्रथम भाव से देखते हैं जातक की सुंदरता की स्थिति, उसके केश, आंखें, आकृति सब लग्न भाव से ही देखा जाता है ।
- लग्न भाव के कारक सूर्य हैं, लग्न पर दोनों प्रभार होते हैं इसीलिए यह शिव रूप होती है अर्थात अर्धनारीश्वर।

द्वितीय भाव

- इस भाव से हम जातक का मुख, दांत, मसूड़े, जीभ, दाहिनी आंख देखते हैं, इस भाव से भोजन का स्वरूप, परिवार, जातक का प्रारंभिक संस्कार, जातक का कुल या कुटुंब, भोजन की आदतें, वांणी, गोत्र, धन अर्थात अष्टलक्ष्मी, ज्वेलरी, धन अर्थात संचित धन, दांतों की बनावट, वाणी - शुभ है या अशुभ होगी, मांसाहार, मदिरापान या शाकाहार आदि सभी देखा जाता है।
- इस भाव से बैंक भी देखते हैं, काल पुरुष कुंडली में यहां वृषभ राशि होती है, और शुक्र की देवी माता लक्ष्मी हैं, इसीलिए यहां से अष्टलक्ष्मी भी देखी जाती हैं क्योंकि इस भाव से भोजन की प्रवृत्ति देखी जाती है, इसीलिए यह स्थान मारक स्थान भी होता है, अर्थात यह मृत्यु का कारण भी बन सकता है।
- इस भाव के कारक गुरु हैं।

तृतीय भाव

- यह भाव संचार का भाव है, संसार में सभी प्रकार के संचार/ लेखन /अनुवाद आदि सभी इस भाव में आते हैं ।
- यह भाव पराक्रम को भी दर्शाता है, अर्थात उद्यम /मेहनत आदि इस भाव से देखा जाता है, साधारण से अधिक प्रयास ही पराक्रम को दर्शाता है, यह भाव उपक्रम को भी दर्शाता है ।
- इस भाव के कारक मंगल हैं और काल पुरुष कुंडली में इस भाव में बुध की राशि आती है, क्योंकि इस भाव में मंगल और बुध दोनों का प्रभाव है इसीलिए सभी प्रकार के साहसिक कार्य, खेल आदि इस भाव में आते हैं ।
- इसी भाव से हम सभी प्रकार की रुचि /शौक भी देखते हैं।
- इस भाव में हमारा हाथ, कंधा, कान आता है, इसलिए हम हमारे हाथों से जो भी करते हैं वह सभी इस भाव से देखे जाते हैं ।
- इसी भाव से हम गुरु उपदेश भी देखते हैं, रिश्तो में इस भाव से हम छोटे भाई बहन को देखते हैं उपनयन या गुरु के दिए सभी मंत्र या ज्ञान इसी भाव से देखे जाते हैं ।

- इस भाव से हम यह देखते हैं कि जातक जो बोलेगा उसका क्या प्रभाव पड़ेगा, क्योंकि यह संचार का भाव है इसीलिये शारीरिक स्तर पर किए गए संचार भी इसी भाव से देखे जाते हैं ।
- काल पुरुष कुंडली में यहां मिथुन राशि आती है इसीलिए यह मैथुन की राशि भी है
- इसी भाव से छोटी यात्राएं और पड़ोसी भी देखे जाते हैं

चतुर्थ भाव

- काल पुरुष कुंडली में इस भाव का स्वामी चंद्र है, इसीलिए यह भाव मां, मातृभूमि, जन्मभूमि, घर का है ।
- किसी के कई मकान हो सकते हैं परंतु घर एक ही होगा, हमें जो भी वस्तु खुशी देती है वह इस भाव में आती है, जमीन भी इसी भाव से देखते हैं ।
- क्योंकि यह माता का स्थान है इसीलिए यह हीलिंग या उपचार का भी स्थान है, हम अपने शरीर को थकान मुक्त/ पुनः ऊर्जावान चतुर्थ स्थान में ही करते हैं, इसीलिए माता की गोद में हमें परमसुख या शांति का आभास होता है ।
- इस भाव से वाहन सुख संपत्ति, जमीन, वैभव, चल और अचल संपत्ति, हृदय, जगत माता, स्वयं की माता, सभी प्रकार के सुख देखे जाते हैं ।

- इस भाव के कारक भी चंद्र ही हैं, इस भाव में यदि कोई पाप ग्रह बैठ जाए तो जातक की बुद्धि कुबुद्धि हो जाती है, इसीलिए इसका उपचार सर्वोपरि करना चाहिए ।
- इस भाव से हम स्त्री का चरित्र भी देखते हैं, वह सामाजिक दायरे को तोड़ेगी या उसका मान रखेगी ।
- पुरुष की कुंडली में यह भाव जातक की पवित्रता को दर्शाता है ।
- इस भाव से हम मजे को भी देखते हैं, सुख और मजे में सिर्फ एक ही फर्क है कि मजा हमें आसक्ति या व्यसन या लत दे सकता है।
- यह केंद्र स्थान है, अर्थात विष्णु स्थान ।
- इस भाव में पाप प्रभाव हृदयरोग भी दर्शाता है ।
- यह हमारी प्राथमिक शिक्षा का स्थान है और हम अपनी माता से क्या सीखते हैं वह भी यहीं से देखते हैं।
- हमारी बुद्धि मन से चलती है, इसीलिए यह स्थान शुद्ध होना अत्यधिक महत्वपूर्ण है ।
- इस भाव के सभी उपचार जगत माता के विभिन्न रूपों की पूजा करके किए जाते हैं ।
- यह भाव जनता का भी स्थान है ।

पंचम भाव

- यह भाव हमारे चित्त का भाव है और यह हमारी बुद्धि का भी स्थान है, इस भाव से हम किसी जातक के सीखने की क्षमता को भी देखते हैं, यह दूसरा त्रिकोण है - प्रथम भाव के बाद ।
- यह मंत्र का भी स्थान है, यह हमारी शिक्षा का भी स्थान है, द्वितीय भाव कुल की शिक्षा है, चतुर्थ हमारी प्राथमिक शिक्षा है और पंचम हमारी व्यावसायिक शिक्षा है, यह भाव पूर्व पुण्य का भाव है, शिक्षा पूर्व पुण्य से आती है अर्थात जातक कितना अधिक पढ़ेगा और किस स्तर तक पढ़ेगा यह निर्धारित पंचम भाव से ही होता है ।
- इस भाव के कारकत्वों पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता, इससे संबंधित कार्य जातक को करने ही पड़ते हैं, उदाहरण यदि किसी की संतान रात में रोए तो उसे कुछ भी करके बच्चे के लिए उठना ही पड़ेगा, संतान हमारे पूर्व जन्म के कर्मों से ही आती है इसीलिए अच्छी या विपरीत यह सब हमारे कर्म ही होते हैं ।
- पंचम स्थान भविष्य का स्थान है और भविष्य पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता, क्योंकि यह भविष्य का भाव है इसीलिए यह भाव हमारी भविष्य की योजनाओं के लिए भी जिम्मेदार है, इस स्थान पर बैठे ग्रह पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता क्योंकि वह हमारे चित्त पर बैठा होता है ।

- इस भाव से प्रेम भी देखा जाता है, यह भाव मंत्र का भाव है क्योंकि यह चतुर्थ से द्वितीय है इसीलिए मंत्र हमारे मन का भोजन है और मंत्र जप करने से हमें मानसिक कष्ट से आराम मिलता है ।
- क्योंकि यह चतुर्थ से द्वितीय है इसीलिए यदि कोई बुरे विचार रखता है तो उसका भविष्य खराब हो जाता है क्योंकि जो भी हम पंचम से सोचते हैं वही हमारे जीवन में घटित होता है क्योंकि पंचम हमारा भविष्य भी है ।
- काल पुरुष कुंडली में इस भाव के स्वामी सूर्य हैं अर्थात् यहां अग्नि रहती है अर्थात् हम जो खाते हैं वही हमारे चित्त में रहता है यदि कोई मांस मदिरा भोग करता है तो उसके विचार उसी प्रकार के हो जाते हैं ।
- इस भाव से हमारा पेट देखा जाता है, इसीलिए संतान भी इसी भाव से आती है, यह भाव श्रजन का भाव है, अतः हमारी रचनात्मकता इसी भाव से आती है मनोरंजन भी इसी भाव से देखते हैं क्योंकि छोटा पर्दा - बड़ा पर्दा सभी इसी भाव से देखे जाते हैं ।
- चेले या शिष्य भी इसी भाव से देखे जाते हैं अतः शिक्षक के लिए पंचम भाव बलवान होना अनिवार्य है।
- इस भाव से यह देखा जाता है कि हमारे पूर्व जन्मों में से कौन से कर्म इस जन्म में हमें भोगने हैं ।

- लग्न, पंचम, नवम यह लक्ष्मी स्थान है, यह सभी भावों में सबसे महत्वपूर्ण भाव हैं, इस भाव से संतान देखी जाती है ।
- सूर्य काल पुरुष कुंडली में पंचम भाव के स्वामी होते हैं और लग्न के कारक होते हैं इससे हम यह समझ सकते हैं कि हमें जीवित रहने के लिए सूर्य की अग्नि और भोजन अत्यंत आवश्यक है ।
- इस भाव के कारक गुरु हैं, इस भाव से पूर्व जन्म और पूर्व पाप देखे जाते हैं ।
- इसी भाव से शेयर मार्केट, सट्टा आदि भी देखा जाता है और जनता या समाज में ख्याति भी इसी भाव से देखते हैं क्योंकि पंचम भाव चतुर्थ का दूसरा है अर्थात जनता (चतुर्थ) का धन ।
- इसी भाव से स्त्री की कुंडली में गर्भाशय भी देखते हैं, प्रेम संबंध भी इसी भाव से देखते हैं।

षष्ठम भाव

इस भाव से हम ऋण, रोग, शत्रु देखते हैं, हमारे षट रिपु इसी भाव से देखे जाते हैं जो कि काम - क्रोध- लोभ- मोह - मद - मत्सर(headlessness) हैं ।

- किसी भी जन्म में षटरिपु हमारे सबसे बड़े शत्रु हैं, क्योंकि यदि सुविधाएं हो होते हुए भी कोई खुश रह ना रह पाए तो इससे बड़ी कोई सजा नहीं है ।
- ऋण का अभिप्राय यहां सभी प्रकार के ऋणों से है, जैसे पूर्व जन्म के माता-पिता या किसी अन्य संबंधी का ऋण साथ ही धन से संबंधित ऋण भी इसी भाव से देखते हैं ।
- इस भाव से हम हमारे आंतरिक और बाह्य दोनों ही शत्रु देखते हैं, यह भाव सबसे अशुभ भाव है क्योंकि यह एक प्रकार का बंधन है जो कि जातक को तब तक नहीं छोड़ता जब तक कि उसका पूरा ऋण भुगतान नहीं हो जाता ।
- शत्रु हमारे ऊपर दो प्रभाव करते हैं, एक तो यह कि वह हमारे मार्ग में बाधा बनते हैं और दूसरा कि वे हमें सर्वोत्तम कार्य करने के लिए बाधित करते हैं ।
- यह भाव प्रतियोगिता का भी भाव है, अतः जातक या तो जीतता है या हारता है, प्रतियोगी परीक्षाओं में भी इस भाव का योगदान होता है, खेल की प्रतियोगिताओं जैसे क्रिकेट, फुटबॉल आदि या टेंडर आदि सभी इस भाव से देखे जाते हैं, अतः यदि किसी को आईएस पास करना है तो षष्ठम भाव का बलवान होना अनिवार्य है, परंतु यदि कोई बीए बीकॉम आदि परीक्षाओं में है तो यहां षष्ठम भाव लागू नहीं होगा ।
- कलयुग में यह भाव ही सबसे भारी भाव है क्योंकि इस युग में धरती पर सभी इसी भाव में फंसे हैं ।

- इस भाव से हम जातक की बीमारी का प्रकार, समय, प्रभाव, लग्न का स्वास्थ्य आदि देखते हैं ।
- इस भाव से यह समझा जा सकता है कि हमारे पूर्व जन्म के कर्मों के आधार पर हमारी षटरिपु हमें प्राप्त होती हैं और इन्हीं षटरिपु से हमारे रोग जुड़े हैं ।
- हम सभी के जीवन में मुख्यतः तनाव का कारण यही भाव होता है ।
- यह भाव ब्रम्हचर्य का भी भाव है ।
- इस भाव में हमारी पीठ (कमर के पीछे) आती है, अतः इस जिसको भी कमर दर्द रहता है वह इस भाव से परेशान है, पीठ दर्द का सरलतम उपाय पंचकर्मा है, अतः जब शरीर से विषाक्त पदार्थ निकलते हैं तभी कमर दर्द में आराम मिलता है अतः यह षटरिपु के कारण ही होता है ।
- इस भाव से हम लीवर/ यकृत भी देखते हैं, हम मिश्रित भाषा में यह कहते हैं कि उसके पास लड़ने का जिगर नहीं है, इसका अभिप्राय यह है कि षष्ठम भाव हमें लड़ने की क्षमता प्रदान करता है, यह भाव हमें परिस्थितियों से लड़ने की क्षमता के साथ साथ इस बल को सही दिशा भी देने में भी सहायक होता है, इसीलिए ऐसे पदार्थ जिनके जिनसे लीवर में समस्या आती है वह हमें दिशा हीन/गति हीन कर देते हैं ।

- काल पुरुष कुंडली में इस भाव में कन्या राशि आती है, यह राशि उत्पादकता की राशि है और यह पृथ्वी तत्व राशि है, बुध का षटरिपु जलन है, इस भाव के मुख्य कारक शनि हैं, अतः ऋण रोग शनि के कारण आते हैं, अर्थात हमारे पूर्व कर्मों के कारण आते हैं और इस भाव के द्वितीय कारक मंगल हैं अर्थात शत्रु।
- इस भाव से मामा देखे जाते हैं ।
- यह भाव शारीरिक व्यायाम का भी भाव है अर्थात योग /दौड़ आदि व्यायाम इस भाव से देखे जाते हैं ।
- यह भाव सेवा और नौकरी का भी भाव है अर्थात षटरिपु /शत्रु से बचने का सरलतम उपाय सेवा ही है ।
- क्योंकि यह सेवा का भाव है इसीलिए सभी प्रकार के सेवा क्षेत्र या सर्विस सेक्टर इसी भाव में आते हैं ।
- संपूर्ण न्यायपालिका और उससे जुड़े क्षेत्र इसी भाव में आते हैं ।
- डॉ आदि के प्रोफेशन अर्थात रोग से संबंधित सभी इंडस्ट्रीज इसी भाव से देखी जाती हैं ।

- क्योंकि यह ऋण का भाव है और सेवा का भाव है इसीलिए नौकरीपेशा लोग जिसके लिए भी कार्य करते हैं वे अपने मालिक /नियोक्ता के ऋण चुका रहे होते हैं ।
- यह भाव गलतियों का भी भाव है ।
- इस भाव से हम अनुशासन भी देखते हैं अर्थात जातक जीवन में अनुशासित होगा या नहीं ।
- यह वह पाप है जो जातक ने दूसरों के लिए किए हैं ।

सप्तम भाव

- काल पुरुष कुंडली में यह भाव शुक्र की राशि तुला का है ।
- इस भाव के कारक भी शुक्र ही हैं ।
- क्योंकि यह लग्न के विपरीत का भाव है इसीलिए हमारे विपरीत का सब कुछ इसी भाव से देखा जाता है, इसलिए जीवन साथी सदैव हमारे विपरीत होते हैं, अतः यह हमारे जीवन साथी का भाव है ।

- इस भाव को कलत्र भाव भी कहते हैं इसीलिए विवाह को कलत्र सुखम कहते हैं अर्थात क्लेश में सुख ।
- शुक्र हमारे जीवन में सभी प्रकार के मोह को दर्शाते हैं इसीलिए हम हमारे जीवन साथी के प्रति कई बार असुरक्षित हो जाते हैं और यही कई बार हमारे जीवन में क्लेश का भी कारण बन जाता है ।
- इस भाव को मारक भाव भी कहते हैं क्योंकि यदि किसी का वैवाहिक जीवन कष्टप्रद है तो जीवन साथी ही उसके लिए मरण कारक बन जाता है ।
- यह भाव हमारे सभी प्रकार के पार्टनर को भी दर्शाता है अर्थात व्यापारिक और जीवन साथी सभी इसी भाव से देखे जाते हैं, इसी भाव से हम व्यापार भी देखते हैं ।
- शुक्र के कारण हमारे जीवन में जो भी मोह है वह इसी भाव से देखा जाएगा ।
- यह भाव हमारी दैनिक दिनचर्या का भाव है ।
- यह भाव शारीरिक सम्बंध का भी भाव है और शारीरिक संबंध में कोई कैसा महसूस करेगा यह इस भाव से ही देखा जाएगा ।

- क्योंकि यह लग्न के विपरीत है इसीलिए कोई जातक जब अपने जीवनसाथी को देखता है तो उसे क्या दिखता है यह इस भाव से निर्धारित होता है ।
- यदि कोई विवाहित है तो यह महत्वपूर्ण है कि वह किसी भी धार्मिक / सांसारिक कार्य में अपने जीवनसाथी को सम्मिलित करें अन्यथा वह कार्य अधूरा ही माना जाता है ।
- इस भाव से हम व्यापार देखते हैं, परंतु मुख्यतः स्व नियोजित रोजगार अर्थात सेल्फ एम्प्लॉयड ।
- क्योंकि शनि यहां उच्च के होते हैं इसीलिए यह मनोरंजन का भाव है और क्योंकि यह संध्या के समय को दर्शाता है अतः मनोरंजन, पब, बार, यौन क्रिया, मदिरा आदि के सभी आनंद इसी भाव से देखे जाते हैं ।
- इस भाव से किसी भी जातक से उसके विपरीत लिंग के संबंध भी देखे जा सकते हैं ।
- यह भाव वृद्धि का भाव है ।
- यह भाव पद प्राप्ति का भी भाव है अर्थात यहां से पदोन्नति ,प्रतिष्ठा, हैसियत भी देखी जाती है ।

- अतः समाज में किसी जातक की स्थिति उसके जीवनसाथी से निर्धारित की जाएगी ।
- यह भाव ध्यान का भी भाव है
- इस भाव से हमारे गुर्दे /किडनी और अग्न्याशय अर्थात पैक्रियाज देखे जाते हैं, कुछ ऋषि मुनि इस भाव में हमारी जननेन्द्रियों को भी मानते हैं ।
- तुला राशि में मंडी /बाजार भी आता है, अतः ऑनलाइन ऑफलाइन मार्केट इसी भाव से देखे जाएंगे ।
- इस भाव से हम विदेश भी देखते हैं ।

अष्टम भाव

- इस संसार में जो कुछ भी अज्ञात है वह इसी भाव से देखा जाता है जैसे दुर्घटना, भय, डर, वहम, पागलपन, अज्ञात कष्ट यह सब इसी भाव से देखे जाते हैं ।
- इस भाव को हम ब्लैक होल की तरह समझ सकते हैं अतः इस भाव से क्या बाहर आएगा किसी को ज्ञात नहीं है ।

- इस भाव को हम आयुष्य भाव भी कहते हैं और कुछ लोग इसे मृत्यु का स्थान भी कहते हैं, दोनों का अभिप्राय एक ही है, अर्थात जातक की आयु कितनी होगी और किस स्थिति में उसकी मृत्यु होगी, इसका निर्धारण इसी भाव से होता है ।
- यह भाव निज दोषों का भाव है, अर्थात ये वह पाप हैं जो जातक ने स्वयं किए हैं, अर्थात इन कर्मों में केवल जातक का ही योगदान है और उसकी किसी भी संबंधी आदि का कोई योगदान नहीं ।
- सभी 12 भाव में सबसे रहस्यमई भाव यही है क्योंकि इस स्थान से क्या फल और कब मिलेगा यह निर्धारित करना कठिन है ।
- पूर्व जन्मों के निज दोष ही हमारे इस जन्म की मृत्यु का निर्धारण करते हैं और शास्त्रों में यह निहित है कि मृत्यु के समय जो विचार मन में होते हैं वही विचार जातक अगले जन्म में लेकर पैदा होता है ।
- क्योंकि यह भाव यह निर्धारित करता है कि जातक की मृत्यु कैसे होगी अतः यही भाव निर्धारित करता है कि जातक जीवन कैसे जिएगा ।
- ध्यान और समाधि इसी भाव में आते हैं ।

- यह भाव हमारे प्राण का भी स्थान है इसीलिए यह प्राणायाम का भी स्थान है ।
- इसी स्थान पर हमारी पूरी ऊर्जा रहती है अर्थात यहां मूलाधार चक्र है, यहां से निर्धारित होता है कि हम ऊर्ध्वगामी होंगे या अधोगामी होंगे ।
- ज्योतिष भी इसी भाव से आता है, यह क्योंकि कष्ट का स्थान है अतः जब कोई ध्यान प्राणायाम ज्योतिष आदि अष्टम के कार्य करता है तो उसके जीवन में कष्ट कम होने लगते हैं क्योंकि वह कुछ समय इसी भाव में व्यतीत कर रहा होता है ।
- यह स्थान घोटालों का, धोखाधड़ी का, पर स्त्री पर बुरी नजर का, अनैतिक संबंध, चोरी, जुएं, लॉटरी, गैबलिंग आदि का भी स्थान है ।
- इस स्थान का लाभ किसी को तभी प्राप्त होगा जब हानि होगी अतः यह पैतृक संपत्ति का स्थान है, यह बीमा का भी स्थान है ।
- यह एक गड्ढा है अतः जो कुछ भी गड्ढा खोदकर आता है वह इसी स्थान से आता है जैसे माइनिंग, पेट्रोलियम, डाटा माइनिंग, खोद कर पैदा होने वाली सभी सब्जियां, फसलें आदि रिसर्च, वैज्ञानिक, डिटेक्टिव ।
- इसी भाव में तंत्र, जादू, टोना, वशीकरण, भूत, प्रेत, आत्मा आदि आते हैं ।

- यह स्थान सहज बोध का भी स्थान है ।
- यह स्थान गलतियों का स्थान है अतः जब कोई गलती करता है तो इसी भाव से करता है और किसी की गलती भी इसी भाव से पकड़ते हैं, अतः यही स्थान ऑडिटर का भी स्थान है ।
- काल पुरुष कुंडली में यहां मंगल की वृश्चिक राशि आती है इस राशि से के सः स्वामी केतु है अतः मर्डर, दुर्घटना, रेप आदि सभी विषम फल मंगल के अंतर्गत आते हैं और गुप्त विद्या ध्यान आदि सभी केतु के अंतर्गत आते हैं ।
- इस भाव के कारक शनि हैं अतः हमारे पूर्व जन्म के पाप स्वरूप इस भाव के फल प्राप्त होते हैं ।
- स्त्रियों की कुंडली में यह मांगल्य का स्थान है अतः सुहाग का स्थान है ।
- क्योंकि यह सप्तम से द्वितीय है इसीलिए यह जीवन साथी का मारक स्थान भी है इस स्थान से ससुराल भी देखा जाता ।

- इस प्रकार से समझें तो अष्टम में मुख्यतः असहज विषय आते हैं और इसीलिए अष्टम में जाकर सभी ग्रह असहज हो जाते हैं, महर्षि पाराशर ने कहा है कि इस भाव में या तो कोई ग्रह न हो और हों तो केवल शुभ ग्रह हों ।
- इस भाव में हमारे शरीर में गुर्दा और गुप्तांग आते हैं इसी भाव से यौन क्रिया भी आती है और निर्वहन अंग (डिस्चार्ज ऑर्गन) भी किसी भाव में आते हैं ।
- हमारी नित्य प्रातः इसी भाव से प्रारंभ होती है अतः हम सबसे पहले दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होने के लिए स्नान ग्रह जाते हैं जो कि अष्टम भाव है ।
- अष्टम भाव रुकावट का स्थान है, यदि यहां कोई रुकावट कार्य कर रही हो तो हमारा दिन ही नहीं प्रारंभ हो पाता इसीलिए आयुर्वेद में पेट साफ रखने पर सबसे अधिक जोर दिया गया है यदि यहां रुकावट हो तो सब जगह रुकावट रहती है ।
- यदि इस भाव में किसी जातक के पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो गुदा और पेट संबंधी रोग होते हैं जिनके बारे में बताने में भी शर्म आती है, अतः यहां बैठा अशुभ ग्रह हमारे पूर्व जन्म के पापों को दर्शाता है ।
- अष्टमेश जहां भी बैठेगा वहां का नाश कर देगा यह सिद्धांत षष्ठेश के साथ भी लागू होता है ।

- इसी भाव से शिकायत करने का व्यवहार और दूसरों में दोष ढूंढने की आदत और बेचारा बनने की आदत भी आती है ।
- यह भाव आध्यात्मिकता का भाव है अतः यहां जातक पहले आता है ।

नवम भाव

- यह तीसरा त्रिकोण है ।
- प्रथम - पंचम - नवम को धर्म त्रिकोण कहते हैं, इन्हें अग्नि त्रिकोण भी कहते हैं ।
- यदि काल पुरुष कुंडली में देखें तो प्रथम में मेष, पंचम में सिंह, नवम में धनु, यह तीनों ही अग्नि तत्व राशियां हैं ।
- यह भाव धर्म का भाव है अतः यहां जातक अंतिम होता है ।
- इसी भाव से धर्मालय, गुरु, पिता, मंदिर देखे जाते हैं ।

- क्योंकि यह पिता का स्थान है इसलिए किसी भी जातक का धर्म उसे उसके पिता से ही प्राप्त होता है ।
- इसी भाव से हम जातक का धर्म भी देखते हैं और यह भाग्यस्थान भी है ।
- कोई कितना भी गुणवान क्यों ना हो जब तक उसका भाग्य बलवान नहीं होगा उसके जीवन में समस्या रहेगी ही, पूरी कुंडली में यह भाव सबसे महत्वपूर्ण होता है ।
- इस भाव में काल पुरुष कुंडली में धनु राशि आती है, जिसके स्वामी गुरु हैं, इसीलिए इस भाव से गुरु भी देखे जाते हैं और इसीलिए जब किसी के जीवन में जीवित गुरु आते हैं तो उसका भाग्य बलवान हो जाता है ।
- क्योंकि इस भाव से भाग्य और धर्म दोनों आते हैं इसीलिए पिता से मिले धर्म का पालन करें या ना करें परंतु उसका अपमान कभी न करना चाहिए अन्यथा जातक भाग्यहीन हो जाता है ।
- क्योंकि यह धर्म और भाग्य का स्थान है इसलिए कुल की मान्यताओं और नीतियों का पालन करना अत्यधिक अनिवार्य है, क्योंकि यह सभी भाग्य से जुड़े हैं ।
- यह स्थान दान और तीर्थ यात्राओं का भी स्थान है ।

- इस भाव से विदेश भी देखते हैं, अतः विदेश जाने के लिए इस भाव पर कुछ प्रभाव अनिवार्य है, ताकि जातक पिता की धरती से दूर जा सके ।
- क्योंकि यह भाग्य का स्थान है इसीलिए यहां की यात्रा प्रसन्नता और भाग्य से होती है।
- यह भाव सुरक्षा का भी भाव है अर्थात जब हम छोटे थे तब हमारे पिता हमें बचाते थे और बड़े हो गए तो गुरु बचाने आते हैं ।
- यही भाव हमारे ऑफिस के बॉस को भी दर्शाता है ।
- विवाह और लिव-इन संबंध में केवल नवम स्थान का फर्क होता है, क्योंकि विवाह में नवम भाव शामिल होता है किसी भी विवाह में पिता या गुरु का आशीर्वाद होना महत्वपूर्ण है, अन्यथा विवाह नहीं चलेगा ।
- धनु राशि में संपूर्ण न्यायपालिका के अफसर आदि आते हैं क्योंकि यह षष्ठम से चतुर्थ है अर्थात षष्ठम का सुख केवल वहां कार्यरत अफसरों को ही होगा बाकी सभी तो वहां गलतियों के कारण ही आते हैं ।
- इसी भाव में सभी डॉक्टर भी आते हैं अर्थात षष्ठम का सुख नवम भाव ।

- धनु राशि गुरु की राशि है और गुरु का धन समाधान का धन है ।
- इस भाव के दो कारक हैं गुरु और सूर्य, भाग्य और धर्म संबंधित चीजें गुरु से देखते हैं, पिता और सरकारी पॉलिसी संबंधित चीजें सूर्य से देखते हैं ।
- साला भी इसी भाव से देखते हैं ।
- नाती पोते भी इसी भाव से देखते हैं ।
- शरीर में जांघें इसी भाव से देखते हैं ।

दशम भाव

- यह भाव कर्म का भाव है और चौथा महत्वपूर्ण केंद्र है ।

कोई जातक नौकरी करेगा यह षष्ठम से देखा जाएगा या व्यापार करेगा यह सप्तम से देखा जाएगा, परंतु वहां करेगा क्या यह दशम से देखा जाएगा ।

- इस संसार में जीवित रहने के लिए हमें कर्म करना पड़ेगा, अर्थात हमारी जीविका का इसी भाव से है, क्योंकि हम जन्म कर्म के लिए लेते हैं अतः जब हमारे कर्म समाप्त हो जाते हैं तो हम स्वयं समाप्त हो जाते हैं, अतः यह भाव अत्यंत महत्वपूर्ण भाव है ।
- जब किसी के आयुष का निर्धारण करते हैं तो तीन भाव को मुख्यतः देखते हैं, प्रथम या लग्न, अष्टम / आयुष्य, दशम / कर्म ।
- काल पुरुष कुंडली में मंगल लग्न और अष्टम राशि के स्वामी होते हैं और दशम में मंगल को दिग्बल होता है अतः आयु के लिए मंगल सबसे महत्वपूर्ण हैं ।
- जब तक कोई इस भाव में उर्जा भरता रहेगा तब तक उसका जीवन चलता रहेगा अन्यथा उसे आयुष में समस्याएं प्रारंभ हो जाती है, इसीलिए हम देखें तो साधु-संत व्यापारी कभी सेवानिवृत्त या रिटायर नहीं होते ।
- दशम भाव हमारे सभी प्रकार के कर्म और उन कर्मों के पालन करने के लिए किन सिद्धांतों को लागू करेंगे यह इसी भाव से देखा जाएगा ।
- व्यापार सप्तम में होता है और नौकरी षष्ठम में, परंतु उन सभी क्षेत्रों में कर्म हम दशम में ही करते हैं अर्थात कर्म दशम से ही देखेंगे ।
- यह स्थान राजा के बैठने का स्थान है, अर्थात बॉस को इसी स्थान से देखा जाता है ।

- अतः यदि कोई बड़ा व्यापारी बनना चाहता है तो उसका दशम बलवान होना अनिवार्य है ऐसे ही यदि कोई आईएस बनना चाहता है तो उसका दशम बलवान होना अनिवार्य है क्योंकि कार्य तो वह सिस्टम भाव से करेगा परंतु कर्म वह दशम भाव के आधार पर ही करेगा ।
- इस भाव के पांच कारक हैं, **मुख्य कारक बुध** हैं अर्थात् आप जो कर्म कर रहे हैं उसके बारे में आपको ज्ञान होना अनिवार्य है तभी उस कार्य में सिद्धि मिलेगी ।
- बाकी कारकों में :
 - सूर्य यहाँ यह दर्शाते हैं कि कर्म क्षेत्र में बड़े पद पर जाने के लिए सूर्य और दशम का बलवान होना अनिवार्य है
 - मंगल : किसी भी कार्य में के क्रियान्वयन के लिए मंगल का बलवान होना अनिवार्य है
 - गुरु: जातक जो भी कर्म कर रहा है उसका फल उसे गुरु ही देंगे
- इस भाव से जीवन साथी के पिता को देखते हैं ।
- 3, 7, 10, 11 उपचय स्थान हैं , अर्थात् यहां प्रयास करके/ मेहनत करके जातक अपनी स्थिति में सुधार ला सकता है ।

- काल पुरुष कुंडली में यहां मकर राशि आती है जिसके स्वामी शनि है ।
- शरीर में इस भाव में हमारा हृदय, सीना आता है जो कि निरंतर जीवित रहने के लिए कार्यरत रहता है ।

एकादश भाव

- यह भाव आय का भाव है अर्थात यह इच्छापूर्ति का भाव है ।
- काम त्रिकोण अर्थात 3, 7, 11 का सबसे महत्वपूर्ण त्रिकोण यही है ।
- इस भाव में सभी ग्रह अच्छे माने जाते हैं, इसका अभिप्राय यह है कि हमें जो भी कर्म ईश्वर ने दिए हैं उसके माध्यम से आय अर्जित करने में कोई बुराई नहीं है ।
- क्योंकि यह षष्ठम का षष्ठम है इसीलिए एकादश भाव किसी को हराने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है और कलयुग में हम सभी कुछ ना कुछ इच्छापूर्ति करना चाहते हैं ।
- क्योंकि यह पंचम से सप्तम है इसीलिए यह भाव संतान का मारक स्थान है, अतः यदि कोई अनैतिक रूप से धन अर्जित करता है तो यह उसकी संतान के लिए अच्छा नहीं है, ऐसे लोगों के पूत कपूत निकलते हैं ।

- यह स्थान दंड का भी स्थान है, क्योंकि यह षष्ठम से षष्ठम है अर्थात अनैतिक रूप से अर्जित आय जातक को दंड देती है ।
- एकादश का एकादश भाव, नवम भाव है, अर्थात धन को शुद्ध करने के लिए दान करें ।
- यह स्थान हमारे बड़े भाई या उनके समतुल्य लोगों का है ।
- इसी भाव से हमारे मित्र भी देखे जाते हैं ।
- इस भाव में दाहिना हाथ और दाहिना कान आता है ।
- इस भाव के कारक गुरु हैं ।

द्वादश भाव

- यह भाव मोक्ष अर्थात मुक्ति का स्थान है ।
- शास्त्रों में विदित है कि जब प्राण जाते हैं तो 2 गति होती हैं, अशुभ कर्मों के जातकों के प्राण गुदाद्वार से जाते हैं क्योंकि उनकी यात्रा नर्क की है, शुभ कर्मों के जातकों के प्राण सहस्रार से निकलते हैं ।
- इसी भाव में मोक्ष के साथ-साथ बंधन भी है ।
- 6,8,12 को यदि अशुभ में क्रमागत देखें तो ।
- छठा सबसे दुस्थान है ।
- अष्टम उससे कम दुस्थान है ।
- द्वादश सबसे कम दुस्थान ।

- इस संसार में जो कुछ भी हमसे छूटता है या खर्च करते हैं या हानि होती है, वह सभी इसी भाव से आता है, स्वयं की हानि भी इसी भाव से होती है ।
- यह भाव जेल, अस्पताल, विदेश का भी है ।
- यह सीमा क्षेत्र है अर्थात यहां वह सभी आता है जहां जाने के लिए सीमा पार करनी पड़े अर्थात जब कोई स्वस्थ शरीर से बीमारी की ओर जाता है तभी वह अस्पताल जाता है, जब कोई अपने देश की सीमा छोड़ता है तभी वह विदेश जाता है, जब कोई भूलोक की सीमा छोड़ता है तभी वह वैकुंठ लोक जाता है ।
- यह भाव निद्रा का स्थान भी है ।
- इसे चैन या ध्यान का स्थान भी कहते हैं, इससे यह भी समझा जा सकता है कि यदि कोई पैसे उधार ले रहा है परंतु वापस ना करे तो उसकी नींद खराब हो जाएगी ।
- क्योंकि शुक्र देव इस स्थान पर उच्च के होते हैं इसीलिए इस भाव में शैय्या सुख भी आता है अर्थात सोते समय और शारीरिक संबंध के समय जातक क्या अनुभव करेगा यह इसी भाव से देखा जाएगा ।

- काल पुरुष कुंडली में यहाँ मीन राशि आती है और शुक्र यहाँ उच्च के होते हैं, अर्थात मोक्ष के लिए दो मार्ग हैं, एक गुरु का और एक शुक्र का ।
- इसी स्थान से हम परस्त्रीगमन, वेश्यावृत्ति, अवैध संबंध भी देखते हैं ।
- सप्तम से यदि गिने तो द्वादश भाव षष्ठम होता है अर्थात हमारे जीवन साथी की सौतन का स्थान यही है ।
- यहां वे सभी स्थान आते हैं जहां बंधन होता है, क्योंकि शुक्र मोह को दर्शाते हैं अतः भोग से बंधन आता है, अतः मोक्ष के लिए गुरु का मार्ग ही चुनना चाहिए ।
- इस स्थान के कारक शनि हैं, सभी खर्चे, हानि, जेल, वैराग्य आदि शनि के प्रभाव हैं ।
- यह स्थान गुरु का घर अर्थात आश्रम भी है ।
- वीजा, पीआर आदि सभी इस भाव से देखते हैं ।
- हमारा सबकॉन्शियस माइंड और एक आंख इस भाव में आती है ।

- मीन राशि में पैर के तलवे आते हैं ।
- लक्ष्मी के तीन उपयोग हैं:
 - दान
 - भोग
 - नाश
- जातक को यह निर्णय करना है कि लक्ष्मी खर्च किन कामों में करें ।
- चार प्रकार की धी शक्तियां होती हैं
 - बुद्धि जो की प्रथम प्रथम भाव से आती है ।
 - शुद्धि जो कि चतुर्थ भाव से आती है ।
 - वृद्धि जो कि सप्तम भाव से आती है ।
 - सिद्धि जो की दशम भाव से आती है ।

- भावों के प्रकार
 - उपचय
 - अपोक्लीम
 - केंद्र
 - त्रिकोण
 - त्रिक
- केंद्र भाव विष्णु स्थान हैं, यह सबसे शुभ भाव हैं ।
- त्रिकोण भाव लक्ष्मी स्थान हैं ।
- लग्न भाव में विष्णु और लक्ष्मी दोनों गुण होते हैं, इसीलिए यह सबसे शुभ स्थान होता है, इससे यह भी समझा जा सकता है कि लग्न स्त्री और पुरुष दोनों गुण प्रधान होती है ।
- उपचय अर्थात जहां हम प्रयत्न करके परिवर्तन कर सकते हैं ।
- त्रिक भाव से सभी प्रकार के कष्ट आते हैं ।

- अपोक्लीम भाव अच्छे और बुरे दोनों ही गुण लिए होते हैं ।
- भावों के नाम : जीवन के स्तंभ के आधार पर
 - 1, 5, 9 : धर्म त्रिकोण
 - 2, 6, 10 अर्थ त्रिकोण
 - 3, 7, 11 काम त्रिकोण
 - 4, 8, 12 मोक्ष त्रिकोण
- भावों के नाम तत्वों के आधार पर
 - 1, 5, 9 अग्नि तत्व
 - 2, 6, 10 पृथ्वी तत्व
 - 3, 7, 11 वायु तत्व
 - 4, 8, 12 जल तत्व
- ऊपर दिए गए चार तत्व हमारे जीवन के आयन अर्थात दिशाएं हैं ।